भारत के प्राचीन इतिहास का ज्ञान हमें निम्नलिखित साधनों से प्राप्त होता है :—

(१) तत्कालीन-साहित्य
(२) अभिलेख (Inscriptions)
(३) मुद्राएँ
(४) विदेशी विवरण
(५) पुरातत्व सम्बन्धी

(१) साहित्यिक साक्ष्य

प्राचीन भारतीय साहित्य भण्डार अत्यन्त समृद्ध एवं भरा पूरा है। यद्यपि उसमें ऐतिहासिक बातों का क्रमबद्ध वर्णन बहुत कम मिलता है, तथापि उससे सामाजिक जीवन के संबंध में महत्वपूर्ण सूचनायें प्राप्त होती हैं। प्रोफेसर एन० एन० घोष ने साहित्यिक साक्ष्य को दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया है—

(१) धार्मिक साहित्य अथवा अनैतिहासिक ग्रन्थ,
(२) लौकिक साहित्य अथवा ऐतिहासिक ग्रन्थ।

वेद

हिन्दुओं का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। इसमें आर्यों के सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन का विशद् वर्णन मिलता है। आर्य भारत के भिन्न-भिन्न भागों में किस प्रकार फैले ? उनमें कौन-कौन से आन्तरिक विभाजन थे ? इन सभी बातों का पता इससे चलता है।

अन्य तीन वेदों (सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद) द्वारा उत्तर वैदिक काल के जीवन पर प्रकाश पड़ता है। उपनिषद्, आरण्यक तथा ब्राह्मण ग्रन्थों से भी हमें इस विषय में बहुत सहायता मिलती है। उपनिषदों में ईश्वर तथा आत्मा पर विचार किया गया है। जिसके अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि इस काल के आर्यों ने सभ्यता, धर्म एवं संस्कृति के क्षेत्र में विशेष उन्नति की जिसकी तुलना उस काल के किसी अन्य देश के निवासियों से नहीं की जा सकती है। ब्राह्मण तथा उपनिषदों से परीक्षित के बाद तथा बिंबसार के पूर्व के इतिहास का ज्ञान प्राप्त होता है।

पुराण

अन्य धार्मिक ग्रन्थ जिनसे ऐतिहासिक सूचना प्राप्त होती है, पुराण है। विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण, वायु पुराण तथा ब्रह्मपुराण से कुछ राजवंशों के बारे में काफी सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। पुराणों में अधिकतर देवी-देवताओं की कथाएँ दी हुई हैं और ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण केवल यत्र-तत्र ही मिलता है; फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से इनका महत्व बहुत अधिक है क्योंकि ये वास्तविक इतिहास के अधिक निकट हैं। इनके संबन्ध में डा० विन्सेन्ट स्मिथ का कथन है कि "यदि इनका सावधानी से अध्ययन किया जाये तो इनके द्वारा मूल्यवान ऐतिहासिक गाथाएँ प्राप्त हो सकती हैं।"

"They (Puranas) are records of high importance and extremely helpful in the laborious task of reconstructing the early political history of India."

V. A. Smith

प्रश्न १—प्राचीन भारत का इतिहास जानने के साधनों का उल्लेख कीजिए और बताइये कि उनके द्वारा प्राचीन काल की स्थिति पर क्या प्रकाश पड़ता है ?

अथवा

प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रधान आधारों (स्रोतों) का संक्षिप्त वर्णन कीजिये। (१९६५)

किसी भी विषय का समुचित ज्ञान प्राप्त करने के लिए कुछ न कुछ आधार, स्रोत एवं ठोस साधन आवश्यक हैं। जिस प्रकार कोई वैज्ञानिक प्रयोगशाला के आधार पर खोज करके किसी वस्तु को सामने रख देता है; उसी प्रकार इतिहासवेत्ता भी कुछ ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर काल विशेष के इतिहास को प्रस्तुत करते हैं। उनके ज्ञान का साधन अतीत की उपलब्ध सामग्री और प्राचीन काल का साहित्य, स्मारक तथा अभिलेख आदि हैं जिनके आधार पर वह ऐतिहासिक तथ्यों को प्रकाश में लाता है।

प्राचीन भारत के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं है। इस विषय में विभिन्न इतिहासकारों ने अपने विचार यों व्यक्त किये हैं—

"भारतीय इतिहास की सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व की किसी महत्वपूर्ण घटना की तिथि निश्चित नहीं की जा सकती।" —एलफिस्टन

"हिन्दू काल में हम उस समय तक के इतिहास की घटनाओं का विस्तार-पूर्वक तथा निश्चित रूप से वर्णन नहीं कर सकते जब तक भारत अन्य राष्ट्रों के सम्पर्क में नहीं आया था।" —कावेल

"हिन्दुओं के पास ऐसा कोई प्रामाणिक तथा विश्वसनीय ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं है जिससे यह सिद्ध हो सके कि उनकी वास्तविक इतिहास लिखने की प्रवृत्ति रही हो।" —फ्लीट

"हिन्दू लोग इतिहास की ओर विशेष ध्यान नहीं देते। वे काल-क्रमानुसार वंश परिचय देने में बड़ी असावधानी रखते हैं और जब सूचना देने के लिए विवश किया जाता है तब वे हैरान होकर कथायें कहना आरम्भ करते हैं।"— अलबरूनी

कुछ विद्वानों ने तो यहाँ तक लिखा है कि भारत का कोई इतिहास ही नहीं है। इन भ्रमात्मक धारणाओं का मूलाधार यही है कि हमारे देश में ऐसे ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना नहीं हुई जिनसे हमारे देश के इतिहास का क्रमबद्ध विवरण प्राप्त होता। फिर भी विद्वानों ने इन कठिनाइयों के होते हुए भी परिश्रम तथा लगन से अन्वेषण कर, प्राचीन भारत के इतिहास के आधार, स्रोतों एवं साधनों को खोज निकाला है।